# आदिनाथ जिन पूजा

## (रचयिता-आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज)

**हे आदिनाथ तीर्थेश प्रथम, हे धर्मतीर्थ नायक प्रभुवर।**
**हे नाभिराय मरुदेवी सुत, हे दयासिंधु! हे करुणाकर॥**
**हे नाथ! स्वाश्रय से तुमने, शिवमार्ग सहज प्रगटाया है।**
**करके बिहार इस नौका में, भवसागर पार लगाया है॥**

**मैं भी भवसागर पार करुँ, बनकर स्वामिन्! शिवमगचारी।**
**पाऊँ रागादिक दोष रहित, निज शुद्ध आत्मा अविकारी॥**
**मैं अष्ट द्रव्य का थाल सजा, हे नाथ! शरण में आया हूँ।**
**आओ तिष्ठो हृदयासन पर, शुभभाव हृदय में लाया हूँ॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

### जल

**हे प्रभो! आपने दुःखदायी, इस जनम-मरण का नाश किया।**
**मैं अजर, अमर अविनाशी हूँ, ऐसा चैतन्य प्रकाश किया॥**
**हे नाथ आपके पथ पर ही, चलकर तुम सम बन पाऊँगा।**
**जब जन्म-जरा-मृत्यु नाशूँगा, अरिहंत महापद पाऊँगा॥**
**प्रासुक जल लाया प्रभो! अर्पित है त्रय बार।**
**सम्यग्दर्शन-ज्ञान-वृत्त, पा होऊँ भव पार॥**

ॐ ह्री श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् निर्व. स्वाहा।

### चंदन

**भव-भव में पाये भव अनंत, लेकिन निज विभव नहीं पाया।**
**अब शांत करुँ भव ज्वाला को, शीतल चंदन लेकर आया॥**
**निज में उपयोग सिमट आया, भव-भव का क्षण में नाश हुआ।**

**शीतल चैतन्य सरोवर में, हे नाथ! सहज आवास हुआ॥**
**चरणों में अर्पित अहा! चन्दन की यह धार।**
**बनूँ सिद्ध परमातमा, अविनाशी, अविकार॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

## अक्षत

**चिन्मात्र सहज पद पाने को, चिन्मात्र सहज निज को जाना।**
**हे नाथ! आपने ज्ञायक की, महिमा को जब खुद पहिचाना॥**
**चक्री, बलभद्र अनेकों पद, मुझको अब इनकी चाह नहीं।**
**अक्षय शुद्धातम पद पाऊँ, अब मेरी कहीं निगाह नहीं॥**
**लाया हूँ अक्षत धवल अक्षय पद की आश।**
**नित्य शुद्ध चिद्रूप की, पाऊँ सहज सुवास।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

## पुष्प

**होकर स्वभाव में लीन प्रभो!, निष्काम भाव प्रगटाया है।**
**हे नाथ, आपने ब्रह्मचर्य, इसलिए सहज ही पाया है॥**
**मैं भी निष्काम बनूँ स्वामिन्, नित यही भावना भाता हूँ।**
**करके अर्पित पुष्पाञ्जलि को, रागादिक भाव मिटाता हूँ॥**
**सहज शील पालूँ सदा, पाऊँ मुक्ती-धाम।**
**कामभाव का नाश कर, करूँ आत्मविश्राम॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

## नैवेद्य

**झरता शुद्धात्म प्रदेशों से, उपशम रस का झरना झर-झर।**
**हे विभो! क्षुधा का नाश किया, जब आतम अनुभव हुआ प्रखर॥**
**मैं क्षुधा रोग का नाश करुँ, इसलिए शरण में आया हूँ।**
**निज चिदानंद रसपान करुँ, नैवेद्य थाल भर लाया हूँ॥**

**अरस स्वभावी आतमा, सहज शांति का द्वार।**
**पुद्गल से सुख कामना, है चेतन की हार॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

## दीप

**चिद् मोहकर्म के कारण जो, छाया था प्रभु अँधियार घना।**
**चैतन्य ज्योति के आश्रय से, चिद्कर्म सहज ही हुआ फना॥**
**लाया हूँ कंचन दीप प्रभो!, चरणों इतनी अरदास करुँ।**
**निर्मोह आत्मा में रमकर, चिद्मोह कर्म का नाश करुँ॥**
**मोहनीय है कर्म जो, सब कर्मों का राज।**
**ज्ञान-ज्योति के तेज से, मिटे मोह साम्राज॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं! निर्व.स्वाहा।

## धूप

**आठों कर्मों का मल प्रभु जी, क्षणभर में सहज जला डाला।**
**जो निर्मल उज्ज्वल चेतन को, करता आया अब तक काला॥**
**निश्चय निर्बन्ध स्वानुभव से, आठों कर्मों को दहकाऊँ।**
**मन मोदक धूप चढ़ाता हूँ, निर्बन्ध आत्मा प्रगटाऊँ॥**
**अष्टकर्म दहकाऊँगा, तुम सम हे भगवान।**
**आठ गुणों को पाऊँगा, कर निज आतम ध्यान॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

## फल

**पर की ममता में फँसकर प्रभु, निज समता को खोता आया।**
**कर्मों के फल में मस्त रहा, भवसागर में गोता खाया॥**
**हे नाथ! आपने कर्म और कर्मों का फल जब ठुकराया।**
**आनन्द कन्द शुद्धातम पा, प्रभु मोक्ष महाफल को पाया॥**
**कर्म-कर्मफल नाशकर, मोक्ष महाफल पाउँ।**
**सरस सुगंधित फल चढ़ा, जीवन सफल बनाउँ॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

### महार्घ

**जग के सारे वैभव को तज, आतम अनर्घ्य पद को पाया।**
**शुद्धात्म तत्त्व की महिमा को, सुर नर किन्नर सबने गाया॥**
**स्वातम अनर्घ्य पद मिल जाये, हे नाथ! भावना है मेरी।**
**नीरादिक अर्घ्य करुँ अर्पण, चिद्रूप साधना है मेरी॥**
**अष्टद्रव्य का अर्घ्य ले, नाथ! शरण में आय।**
**पा अनर्घ्य निज आतमा, अष्टम भूमी पाय॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## पंच कल्याणक अर्घ

**सर्वार्थ सिद्धि से प्रभु! प्रस्थान किया था।**
**माता मरुदेवि को धन्य धन्य किया था॥**
**आषाढ़ वदी दोज को प्रभु गर्भ में आये।**
**गर्भोत्सव इन्द्रों ने भी आकर के मनाये॥**
**हे आदिनाथ देव! तेरी वंदना करुँ।**
**कल्याणकों की भाव से आराधना करुँ॥**

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब चैत वदी नवमी का शुभ दिन आया।**
**मरुदेवि माँ की गोद से प्रभु जन्म है पाया॥**
**जन्मोत्सव इन्द्रों ने भी आकर के मनाया।**
**स्वर्गों में क्या नरकों में भी आनंद था छाया॥**
**हे आदिनाथ देव! तेरी वंदना करुँ।**
**कल्याणकों की भाव से आराधना करुँ॥**

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक मंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**भव भोग रोग जैसा प्रभु आपने जाना।**
**इन्द्रिय-विषय-कषाय को दुःख रूप ही माना॥**
**प्रभु! चैत्र कृष्ण नवमी को तप धार लिया जब।**
**दीक्षा का महा उत्सव इन्द्रों ने किया तब॥**
**हे आदिनाथ देव! तेरी वंदना करुँ।**
**कल्याणकों की भाव से आराधना करुँ॥**

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां तप कल्याणक मंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुद्धात्म ध्यान लीन हो पुरुषार्थ बढ़ाया।**
**चढ़कर के क्षपक श्रेणि पूर्ण ज्ञान को पाया॥**
**फाल्गुन वदी एकादशी उत्सव महान था।**
**धर्मोपदेशना का भी पहला विधान था॥**
**हे आदिनाथ देव! तेरी वंदना करुँ।**
**कल्याणकों की भाव से आराधना करुँ॥**

ॐ ह्रीं फाल्गुन वदी एकादश्यां ज्ञानकल्याणक मंडिताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**सूक्ष्म-क्रिया-प्रतिपाती से फिर योग निरोधा।**
**व्युपरत-क्रिया-निर्वृत्ति से फिर कर्मों को रोधा॥**
**थी माघ-कृष्ण-चतुर्दशी मोक्ष को पाया।**
**इन्द्रादिकों ने मोक्ष-कल्याणक को मनाया॥**
**हे आदिनाथ देव! तेरी वंदना करुँ।**
**कल्याणकों की भाव से आराधना करुँ॥**

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक मंडिताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

# जयमाला

भोगभूमि में पुण्य प्रताप, कल्पवृक्षों का रहता योग।
मिला करते सब जीवों को, सहज ही भोग और उपभोग॥

रहा जब भोगभूमि का अन्त, हुये तब हे प्रभु! आदिनाथ।
पा रहे थे तब भविजन क्लेश, समझकर खुद को अरे अनाथ॥

दिया षट्कर्मों का उपदेश, मिटाया क्लेश बने आधार।
कर्मभूमि का है प्रारंभ, बताया काल नियम अनुसार॥

करें कैसे जीवन निर्वाह, मिला था जब ऐसा उपदेश।
असि, मषि, कृषी, शिल्प, वाणिज्य, कला से साधो जीवन शेष॥

प्रजा में छाई शान्ति अपार, कहाये नाथ प्रजापति आप।
सभी ने कीनी जय-जयकार, मिटा सबके मन का संताप॥

तिरासी लाख पूर्व का काल बिताया, राजयोग में नाथ।
भरत-बाहुबलि जैसे पुत्र, पुत्रियाँ ब्राह्मी सुन्दरी साथ॥

सजा करती थी महफिल रोज, अप्सरायें करती थी नृत्य।
सदा नतमस्तक रहते थे, स्वर्ग के देव, इन्द्र बन भृत्य॥

दिवस शुभ आया था तब एक, सजी थी महफिल तब दरबार।
इन्द्र आज्ञा से महफिल में, हुआ नीलांजन का अवतार॥

बजे दम दम दम दम मिरदंग, हुई झन झन झन झन झनकार।
बजे घननं घननं घन घंट, हुई छननं छननं छनकार॥

छिनक में नूपुर युत पदताल, छिनक में जाती थी नभ ओर।
सभी दर्शक जैसे चित्राम्, हो रहे थे अति भाव-विभोर॥

है जीवन जैसे जल की बूँद, करे क्यों कोई अरे विश्वास।
आ रहे आयुकर्म निषेक, न जाने कब हो पूर्ण विनाश॥

नृत्य करती नीलांजन का, आ गया आयुकर्म कराल।
नृत्य रस में न आये विघ्न, अप्सरा प्रगट हुई तत्काल॥
आपको छोड़ किसी को नाथ!, न आया जीवन मृत्यु विचार।
सभी थे नृत्य रंग में लीन, आप वैराग्य सजनि के द्वार॥

## वैराग्य भावना

आत्मगुण की अनुपम मणियाँ, रहा करती हैं जगमग नित्य।
पलटती क्षण-क्षण पर्यायें, अरे करती हों जैसे नृत्य॥
हुआ पर्यायों में गाफिल, न जाना चेतन-शुद्ध-स्वरूप।
निरन्जन निर्विकार ध्रुवधाम, अरस अस्पर्श अगंध अरूप॥
पड़ा संसार कीच के बीच, अनादि से चेतन भगवान।
सींचकर जनम-मरण की बेल, महादुःख पाया धर अज्ञान॥
अनादि से निगोद में वास, दुःखों को कहने में असमर्थ।
अरे पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति पर्यय का क्या अर्थ॥
हाय दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय की धर पर्याय।
असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय का वेष, ज्ञान बिन किसके माँगू न्याय॥
धरा संज्ञी पंचेन्द्रिय रूप, किया पशुगति पा करुण निनाद।
जगत में सुनने वाला कौन, गाढ़ बन्धन-वध निर्मम नाद॥
नरक में क्षण भर भी न शांति, सहा दुःख छेदन-भेदन हाय।
सुरग में देख-देख ऐश्वर्य अन्य देवों का सहा न जाय॥
हाय पाई मानुष पर्याय, सहा नौ माह गर्भ का वास।
झूलता रहा किये मुख नीच, गर्भ निकसैं पाई अति त्रास॥
रहा करता है मानस क्लान्त, अरे जब होता इष्ट वियोग।
झुलसता हृदय, खड़ा ज्यों वृक्ष आग से, जब अनिष्ट संयोग॥

निभाते साथ कौन कितना, बंधु-बांधव कुटुम्ब परिवार।
व्यर्थ कर आर्त्त-रौद्र परिणाम, हाय दुःख सहे अनेकों बार॥

राज वैभव आज्ञा ऐश्वर्य, पुण्य के हैं सब ही साथी।
बनी सेवक सेना चतुरंग, पियादे रथिक अश्व हाथी॥

पुण्य दे कितनी शीतल छाँव, निराकुल सुख बिन मानस दाह।
भरा दुःख ही दुःख इस जगवास, निराकुल सुख मिलता शिवराह।।

देह अति अशुचि अथिर अपवित्र, घिनावन इसमें न कुछ सार।
क्षीरसागर से करने शुद्ध चला जो उसने मानी हार॥

चाम की सुन्दर आभा में, छुपा रहता कुधातु व्यापार।
जगत में दुर्लभ घृणित पदार्थ, स्रवित होते रहते नवद्वार॥

अशुचि तन में सब करते प्रीति, नहीं दिखते ज्ञायक भगवान।
करे जो तप निश्चय-व्यवहार, सहज पाये निज तत्व महान॥

भोग की गहन वितृष्णा में, कहाँ जाना जीवन अनमोल।
भोग सेवन में लगते इष्ट, किन्तु परिपाक समय विषघोल॥

मोह की होती जब-जब जीत, चेतना जब-जब भी हारी।
लगा करती है सबको हाय, भोग कुसुमाबलि तब प्यारी॥

तजूँ अब पर्यायों का राग, रमूँ निज चेतन जो ध्रुवधाम।
लहूँगा वीतराग चारित्र, करुँगा निज घर में विश्राम॥

आप थे चिन्तवन में लवलीन, देव लौकान्तिक तब आये।
आपके उत्तम भावों की प्रशंसा कर-कर गुण गाये॥

नृत्य के राग रंग में भंग, पड़ा तब हुये आकुलित लोग।
किंतु जब जाना भाव विराग, हुये अत्यंत व्याकुलित लोग॥

बैठकर नाथ! पालकी में, आपने वन को किया बिहार।
इन्द्र देवों ने दीक्षा का मनाया, उत्सव कर जयकार॥

लोंच कर पंचमुष्ठि प्रभु आप, ध्यान में लीन हुए छहमास।
माह छह अंतराय के बाद, हुआ आहार सोम श्रेयांस॥
आपने पाया केवलज्ञान, आपने पाया प्रभु निर्वाण।
आपके चरणों आया नाथ!, करो प्रभु मेरा भी कल्याण॥
गाऊँ मैं नित आरती, करके निर्मल भाव।
सहज स्वानुभव से करूँ, भव का नाथ! अभाव॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
आदिनाथ भगवान की, पूजा जो नित गाय।
वह 'विमर्श' आतमनिधि, स्वयं सहज प्रगटाय।।

(इत्याशीर्वादः। परिपुष्पांजलि क्षिपामि)